SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

उच्चतर माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् पुरुष एवं महिला शिक्षकों में व्यावसायिक संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन

ममता अग्रवाल, एम. एड. शिक्षार्थी, शिक्षा विभाग
शासकीय शिक्षक शिक्षा महाविद्यालय, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Author
ममता अग्रवाल
E-mail : shyamamamta@gmail.com

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 24/07/2024
Revised on : 17/09/2024
Accepted on : 26/09/2024
Overall Similarity : 02% on 18/09/2024

शोध सार

शिक्षा निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके द्वारा मनुष्य की जन्मजात शक्तियों का विकास होता है। शिक्षा मनुष्य के जीवन में महत्वपूर्ण लक्षणों को प्राप्त करने का उपयोगी साधन है। शिक्षक अपने पूर्व अनुभव एवं पूर्व अर्जित ज्ञान के द्वारा छात्रों को नवीन अनुभव कराता है तथा उनके भावी जीवन का निर्माण करता है, अतः शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक अनिवार्य है। जिस प्रकार एक कुम्हार गीली मिट्टी को उचित व मजबूत आकाश स्वरुप पहचान देता है ठीक उसी प्रकार एक शिक्षक भी बच्चों को शारीरिक, मानसिक, बौद्धिक और नैतिक मूल्य प्रदान कर समाज व राष्ट्र के लिए एक मजबूत नींव तैयार करता है परंतु यह कार्य शिक्षक तभी कर सकता है, जब उसे अपने कार्य के प्रति संतुष्टि होगी। ग्रामीण अंचलों में संसाधनों का अभाव रहता है जिसका असर शिक्षक की कार्य संतुष्टि पर पड़ता है।

मुख्य शब्द

पुरुष, महिला, शिक्षा, शिक्षक, शिक्षार्थी.

प्रस्तावना

शिक्षक शब्द स्वयं में उत्तरदायित्व को परिभाषित करता है। विभिन्न कालों में शिक्षक के उत्तरदायित्व का स्वरूप भिन्न रहा है। वैदिक काल में आचार्य संबंधित शिक्षा देना तथा शिक्षण के समय वॉकमैन विचार स्मृति चिंतन तथा अन्य सामाजिक क्रियाओ को अपने विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करना ही शिक्षकों की जिम्मेदारी थी। मध्यकाल में शिक्षक का उत्तरदायित्व केवल बादशाह के प्रति माना जाता था। आधुनिक काल में जब शिक्षा अंग्रेजी शासन के अधीन थी तो शिक्षा का एकमात्र उद्देश्य शासन व्यवस्था में सहायता करना था, किंतु वर्तमान में शिक्षकों के उत्तरदायित्व आज शिक्षकों के कार्य मूल्यांकन

से संबंधित हो गई है। शिक्षा व्यवस्था की सफलता या असफलता का काफी कुछ दायित्व शिक्षा पर निर्भर करता है। नई शिक्षा नीति के अंतर्गत अध्यापकों की उत्तरदायित्व को एक विचारणीय विषय माना गया है। दक्षता, व्यवसायिकता तथा निष्ठा की मांग शिक्षकों पर एक बहुत अहम उत्तरदायित्व है। शिक्षक शिक्षण प्रक्रिया का सच्चा सूत्रधार है। उसके व्यक्तित्व का बालको पर अमिट प्रभाव पड़ता है। शिक्षक सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था की धूरी है।

अध्ययन की आवश्यकता

शिक्षक व्यवसाय में एक शिक्षक महत्वपूर्ण व्यक्ति होता है। यह शैक्षणिक व्यवस्था का मूल बिंदु होता है। समाज व राष्ट्र के विकास में सहायता देता है। वर्तमान समय में ऐसे शिक्षकों की आवश्यकता है जो समाज में फैल रही अराजकता, मुल्यहीनता को समाप्त कर राष्ट्रीय एकता व सद्भावना का विचार बालकों में भर सकें ताकि वे बालक नवीन समाज का निर्माण कर सके। जहां अहिंसा, शांति, सद्भावना जैसे गुण समाज में हो। शिक्षक उस कार्य को तभी कर पाएंगे जब वह अपने कार्य से संतुष्ट होंगे।

शिक्षकों के कार्य संतुष्टि व समायोजन के लिए वेतनमान सेवा शर्तों को अधिक आकर्षक बनाने की आवश्यकता है। उनके निवास, अवकाश व प्रशिक्षण के पर्याप्त व्यवस्था हो। उचित अभिरुचि के शिक्षक का चयन हो, शिक्षक के कार्य संतुष्टि व समायोजन के लिए शिक्षकों को गांव में वह सुविधा मिले ,जिससे वह अपने परिवार की व्यवस्था गांव में ही दे सकें। इसके लिए निम्न बातों का ध्यान शासन को रखना आवश्यक है:

1. उचित वेतन की व्यवस्था हो।
2. परिवार के लिए आवास व्यवस्था हो।
3. उनके बच्चों की पढ़ाई व चिकित्सा व्यवस्था स्तरीय हो, इसके लिए सारे राष्ट्र में समान शिक्षा प्रणाली हो।
4. आवागमन की समुचित व्यवस्था हो।
5. सामाजिक सम्मान हो, शिक्षा राजनीति से अलग रहे।
6. शिक्षक को शिक्षण काल में दोहरा कार्य न दें।
7. अच्छे शिक्षक के लिए प्रोत्साहन व्यवस्था हो।
8. कमजोर पर अनियमित शिक्षक के लिए दंड का प्रावधान हो।
9. शिक्षक का सतत् मॉनिटरिंग हो।
10. निरीक्षक को पर्याप्त अधिकार मिले। शैक्षिक निर्देशन का प्रमुख उद्देश्य शिक्षक के व्यक्तित्व तथा सामाजिक व्यवहार को विकसित करना, ताकि सीखने से संबंधित समस्याओं के समाधान हो सके।

कार्य संतुष्टि किसी कर्मचारी में अंतर निहित उसकी बहुत सी मनोवृतियों का परिणाम होता है। इन मनोवृतियों का संबंध कई विशिष्ट तत्वों से भी रहता है जैसे पारिश्रमिक, पर्यवेक्षक, रोजगार की निरंतर कार्य अवस्थाएं कार्य का न्याय पूर्ण मूल्यांकन, उसकी सामाजिक प्रतिष्ठा आदि किसी न किसी रूप में कार्य संतुष्टि पर अवश्य प्रभाव डालती है।

शोध के उद्देश्य

अतः प्रत्येक क्रिया का कुछ उद्देश्य आवश्यक होता है। बिना उद्देश्य के विभिन्न प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। इन्हे देश को ध्यान में रखकर शोध कार्य किया जाता है। प्रस्तुत शोध प्रबंध में निम्नलिखित उद्देश्य हैं:

1. उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष व महिला अध्यापकों की कार्य संतुष्टि की तुलना करना।

शोध परिकल्पना

रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के पुरुष एवं महिला शिक्षकों के कार्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

शोध में प्रयुक्त विधि

शोध अध्ययन के विषय एवं स्वरूप को देखते हुए प्रस्तुत शोध में सर्वेक्षण अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है।

शोध सीमा

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत छत्तीसगढ़ के माध्यमिक शिक्षा मंडल से संबंध रायपुर जिला के नगरी एवं ग्रामीण क्षेत्र के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों को सम्मिलित किया गया है।

प्रतिदर्श

अध्ययन के लिए रायपुर जिला के10 उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों का चयन कर 50 महिला व 50 पुरुष अर्थात् 100 शिक्षकों का चयन किया गया है।

प्रयुक्त उपकरण

बेस्ट शोध अध्ययन में कार्य संतुष्टि के मापन के लिए डॉक्टर प्रमोद कुमार एवं टी .एस. मुथा बंब द्वारा निर्मित जॉब सेटिस्फेक्शन स्केल का प्रयोग किया गया है।

सांख्यिकी विधियों के विश्लेषण द्वारा पदार्थों को अर्थपूर्ण बनाने के लिए मध्यमान, मानक विचलन एवं क्रांतिक अनुपात सांख्यिकी विधियो का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तो का विश्लेषण एवं व्याख्या

उद्देश्य

1. रायपुर जिले के उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के महिला एवं पुरुष शिक्षकों की काव्य संतुष्टि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

उच्चतर माध्यमिक विद्यालयों के महिला और पुरुष शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का माध्यम मानक विचलन एवं टी– अनुपात

क्र. स.	राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय	संख्या (N)	माध्यमान (M)	मानक विचलन (S.D.)	क्रांतिक अनुपात (C.R.)	सार्थक परिणाम
01	पुरुष	50	157.60	14.42	1.125	सार्थक अंतर नहीं पाया गया
02	महिला	50	154.00	17.43		

(स्त्रोतः प्राथमिक समंक)

0.05 सार्थक स्तर असार्थक।

उपयुक्त सारणी एक के अवलोकन से ज्ञात होता है कि उच्चतर माध्यमिक विद्यालय के पुरुष महिला शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का माध्यमान 157.60 एवं 154.00, मानक विचलन 14.42 तथा 17.43 है जो 0.05 स्तर पर असार्थक है। प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर यह निष्कर्ष निकलता है कि उच्चतम माध्यमिक विद्यालयों की महिला एवं पुरुष शिक्षकों के कार्य संतुष्टि में सार्थक अंतर नहीं पाया गया।

शोध अध्ययन का प्रभाव

किसी भी अध्ययन का शैक्षिक प्रभाव उसकी सार्थकता का घोतक होता है। शिक्षा में छात्र, शिक्षक और सामाजिक परिवेश के परस्पर क्रिया शामिल है। यह तीन कारक संपूर्ण शैक्षिक कार्यक्रम की सफलता और असफलता के लिए समान रूप से जिम्मेदार होते हैं। शिक्षार्थी की सफलता मुख्य रूप से शिक्षक की क्षमता पर निर्भर करती है। अतः शासन, प्रशासन को शिक्षकों की मूलभूत समस्याओं के निराकरण हेतु उचित कदम उठाना चाहिए।

सुझाव

शासन के लिए राज्य शासन से अनुरोध है कि प्रदेश में अच्छी शिक्षा व्यवस्था के लिए कार्य संतुष्ट शिक्षकों का चयन व चयनित शिक्षकों के कार्य संतुष्टि के लिए ठोस पहल करें ताकि शिक्षा जैसे पुनीत कार्य में कोई अवरोध न हो। शिक्षा एक पुनीत कार्य है शिक्षकों से भी अनुरोध है कि इस कार्य को पुनीत कार्य मानकर असंतुष्टि का भाव नहीं रहना चाहिए। पूर्ण मानसिकता के साथ इस कार्य से जुड़ना चाहिए। इससे इन्हें स्वयं सुख की प्राप्ति होगी, शाला का वातावरण अच्छा बनेगा, शिक्षा में गुणवत्ता आएगी शिक्षा में शिक्षकों को अच्छा सम्मान प्राप्त होगा। शिक्षा एक सामाजीकरण क्रिया है। गुरु की महत्ता और उनके प्रति आदर भाव समाज का दायित्व है। समय–समय पर आदर्श, सम्मान, प्रशंसा उन्हें कार्य के प्रति संतुष्टि प्रदान करेगा, जिससे नि संदेह शिक्षा के गुणवत्ता में प्रभाव पड़ेगा।

संदर्भ सूची

1. चौबे, के.पी. (1995) बी.टी.सी. प्रमाण पत्र हेतु चयनित महिला एवं पुरूष प्रशिक्षार्थियों की जनसंख्या शिक्षा संबंधी अभिवृत्तियों का तुलनात्मक अध्ययन, एम. एड. लघुशोध प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल वि. वि. रायपुर।
2. गौड़, शोभा, (1998) गोरखपुर मंडल के प्राथमिक विद्यालयों में कार्यरत् बी.टी.सी. एवं विशिष्ट बी.टी.सी. प्रशिक्षित अध्यापकों की कार्यसंतुष्टि, प्रभावशीलता एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन।
3. जोशी, हरीका एल. (2004) ए कम्परेटिव स्टडी ऑफ जॉब स्ट्रेस, जॉब इनवाल्वमेंट एण्ड जाब सटिसफेक्शन ऑफ बी.एड. टीचिंग एण्ड बी.एड. ट्रेण्ड टीचर्स ऑफ राजकोट सौराष्ट्र रीजन ऑफ गुजरात स्टेट, पी.एच.डी. एजुकेशन, सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी, राजकोट।
4. मसीह, आनंद (2018) रायपुर जिले के प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की अभिवृत्ति का विद्यार्थियो के शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन। एम. एड. लघु शोध प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर।
5. नायक, राजेन्द्र (2013) ग्रामीण अंचल में कार्यरत उच्च प्राथमिक शिक्षक के कार्य संतुष्टि एवं समायोजन क्षमता का उनके विद्यार्थियों पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन। एम.एड. लघु शोध प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल वि.वि. रायपुर।
6. सौराष्ट्र रीजन ऑफ गुजरात स्टेट, पी.एच.डी. एजुकेशन, सौराष्ट्र यूनिवर्सिटी, राजकोट।
7. Jordan G. Apawan, Gerly T. Rote (2023), Teacher's Job satisfaction and Teaching commitment, *Psychology and Education: A multidisciplinary journal,* Volume: 9, p.152-158 Document ID: 2023PEMJ738.
9. Shan, M.H. (1998), professional commitment and satisfaction among teacher's in urban middle schools. *Journal of education research,* 92, 67-73 http://dx.doi.org/10.1080/00220679809597578
10. Sharma, Sumeer (2010) Professional commitment of teacher educators in relation to their emotional intelligence, job satisfaction and organizational climate, Punjab University, Department of education.
11. Swami, R. Lal Mal (2016), Job satisfaction and organizational commitment among middle school teacher's in Aizawl City, Government Harnbanga College Aizawl.

****